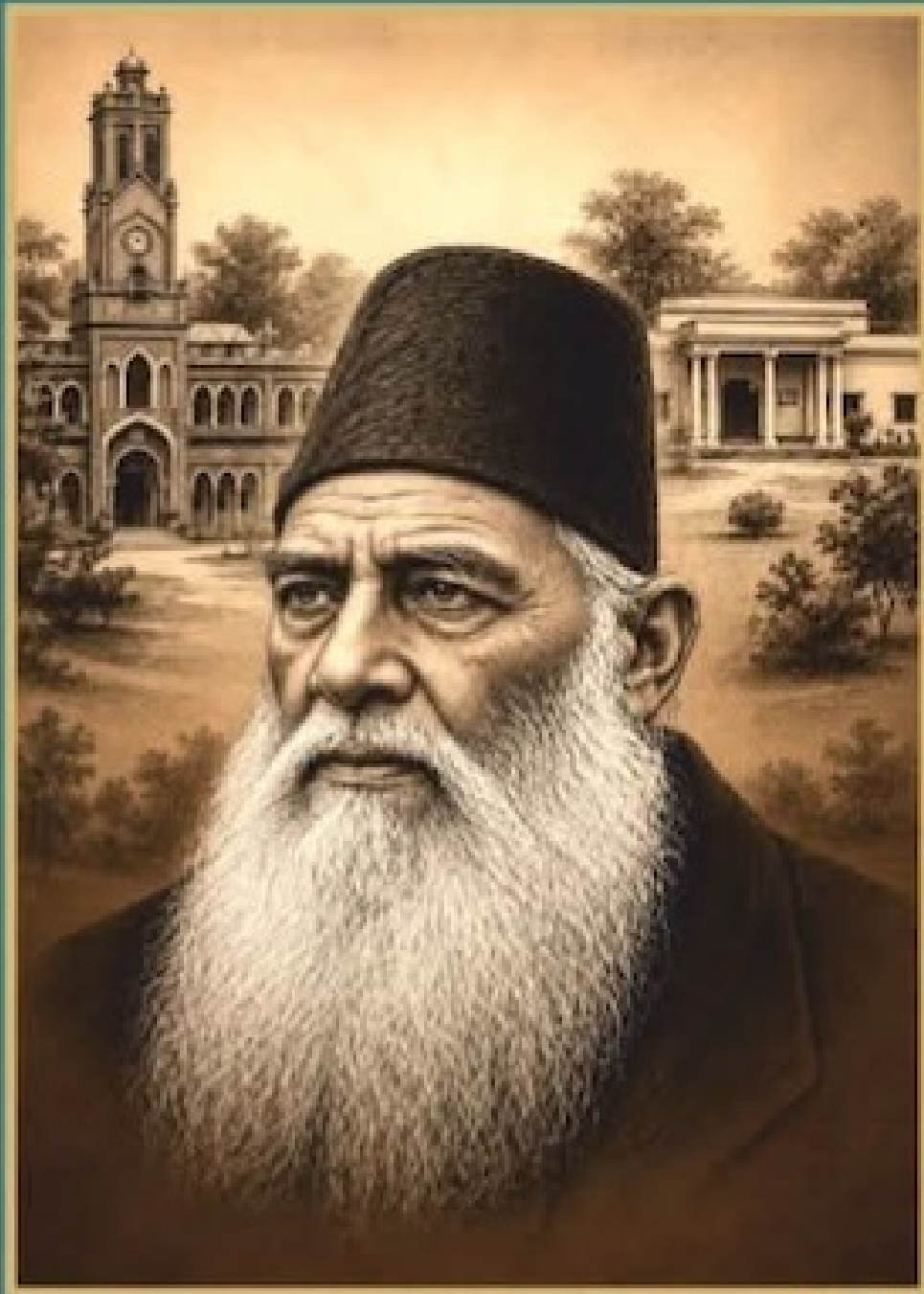




भारतीय नवजागरण के नायक

सर सैयद अहमद खान

संपादक

डॉ. एम. फीरोज़ खान

डॉ. शगुफ़्ता नियाज़

भारतीय नवजागरण के नायक
सर सैयद अहमद ख़ान

::

भारतीय नवजागरण के नायक सर सैयद अहमद ख़ान

सम्पादक

डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान

डॉ. शगुफ़्ता नियाज़



विकास प्रकाशन, कानपुर

मूल्य : पाँच सौ रुपए मात्र

पुस्तक	:	भारतीय नवजागरण के नायक : सर सैयद अहमद खान
©	:	सम्पादक/लेखक
सम्पादक	:	डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान/डॉ. शगुफ़्ता नियाज़
प्रकाशक	:	विकास प्रकाशन 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम 2026 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	छपाईघर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	500/-
ISBN	:	978-93-47390-26-5

भूमिका

डॉ. राहत अबरार

सन् 1857 की जनक्रान्ति के साथ ही पश्चिमी पूर्व और पश्चिमी संस्कृति के बीच टकराव शुरू हो गया। पुरानी परम्पराएं एक-एक करके मिटने लगीं, नये मूल्य जड़ पकड़ने लगे। नई शिक्षा व्यवस्था की माँग बढ़ गई, पुराने ज्ञान की चमक से पूरब की आँखें खुलीं और बिजली के लट्टुओं के सामने मिट्टी के दिये धीमे पड़ गये। पुरानी सामाजिक व्यवस्था और पुरानी तालीमी ढाँचा सब बेजान नज़र आने लगा।

इस क्रान्ति ने न केवल मुसलमानों को मानसिक रूप से प्रभावित किया बल्कि हिन्दुओं में भी जागृति की लहर दौड़ पड़ी। 19वीं शताब्दी भारतीय चेतना के लिये पुनर्जागरण का दौर था, वहीं कुछ लोग इसे भारतीय पुनरुत्थान की संज्ञा देते हैं जिसमें धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और ब्रिटिश राज से जुड़ी राजनैतिक समस्याओं को सुधारने और अपने-अपने स्तर से उस स्थिति को बदलने के लिये बहुत से आन्दोलनों ने जन्म लिया और राष्ट्र निर्माण का बीड़ा उठाया। अलीगढ़ इस पुनर्जागरण के मुख्य केन्द्रों में से एक केन्द्र था और यही इस पुस्तक के लेखकों का मुख्य केन्द्र बिन्दु भी है।

सर सैयद अहमद खान को भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख स्तम्भों और हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रारम्भिक पैरोकारों में से एक माना जाता है। वह आधुनिक शिक्षा, सामाजिक सुधार, सौहार्द और सह-अस्तित्व के अग्रदूत थे।

उनके समकालीन हिन्दुओं के प्रगतिशील और उदारवादी ग्रुपों की तरफ से ब्रह्म समाज, प्रार्थना सभा और आर्य समाज आदि की स्थापना हुई। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, दादाभाई नौरोजी, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, केशवचंद्र सेन, लाला लाजपत राय, स्वामी विवेकानन्द जैसे दिग्गज महापुरुषों के प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रों में सम्मान हो सका। उसका पूरा दायित्व मुस्लिम समाज के लिये अकेले सर सैयद के कंधों पर डाल दिया गया और उसे उन्होंने कौशल के साथ पूरा भी

किया और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सर सैयद अहमद खान के 209वें जन्म दिवस पर सम्पादित पुस्तक 'भारतीय नवजागरण के नायक : सर सैयद अहमद खान' के शानदार प्रकाशन के लिये मैं डॉ. एम. फीरोज़ खान और डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने इससे पूर्व भी हिन्दी में लिखी सर सैयद अहमद खान की पहली जीवनी जो सैयद कासिम अली ने सन् 1941 में इण्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद से प्रकाशित करायी थी। इसी पुस्तक को 2025 में पुनः प्रकाशित कराकर दोबारा जीवन प्रदान किया और हम जैसे सर सैयद पर कार्य करने वालों को हिन्दी भाषा की इस अमूल्य धरोहर से परिचित कराया और ज्ञानवर्धन किया।

सर सैयद पर जीवनी की पहली पुस्तक सन् 1885 में उनके घनिष्ठ मित्र कर्नल जी.एस. आई. ग्राहम के द्वारा अंग्रेज़ी में लिखी गई थी जो सर सैयद की ज़िन्दगी में ही लंदन से प्रकाशित हुई। किसी भी भारतीय पर अंग्रेज़ लेखक द्वारा लिखी गई यह पहली जीवनी है जो लंदन में लिखी और वहीं से प्रकाशित भी हुई।

उर्दू में मौलाना अल्लाफ़ हुसैन हाली ने 'हयात-ए-जावेद' नाम से सर सैयद की पहली जीवनी 1901 में लिखी थी और उसका संशोधित संस्करण सन् 1903 में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक के 38 वर्ष बाद 1941 में सर सैयद की हिन्दी में जीवनी सैयद कासिम अली ने लिखी और उसके प्रथम संस्करण के 84 वर्ष बाद डॉ. एम. फीरोज़ खान ने इस पुस्तक को सम्पादित एवं संशोधित कर सन् 2025 में द्वितीय संस्करण के रूप में विकास प्रकाशन, कानपुर ने प्रकाशित किया जिसके लिए वे अलीगढ़ बिरादरी की तरफ से मुबारकबाद के मुस्तहिक हैं।

हिन्दी में सर सैयद और अलीगढ़ आन्दोलन पर जो पुस्तकें उपलब्ध हैं वह उँगली पर गिनी जा सकती हैं। डॉ. फीरोज़ ने इस कमी को पूरा करने के लिये छह लेखों पर आधारित पुस्तक 'भारतीय नवजागरण के नायक : सर सैयद अहमद खान' सम्पादित की है। इस पुस्तक का पहला लेख स्वर्गीय सर सैयद का जीवन है जो मौलाना अल्लाफ़ हुसैन हाली की उर्दू पुस्तक 'हयात-ए-जावेद' का हिन्दी अनुवाद का पहला अध्याय है जिसे डॉ. राजीवलोचन नाथ शुक्ल व डॉ. परवेज़ फ़ातिमा ने किया है।

सर सैयद अहमद खान भारतीय नवजागरण के उन अग्रणी चिंतकों में हैं, जिन्होंने शिक्षा, सामाजिक सुधार और बौद्धिक जागरण को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का आधार माना। उनका चिंतन, परंपरा और आधुनिकता के मध्य संवाद स्थापित करते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किकता तथा मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठापित करता है। अलीगढ़ आंदोलन के माध्यम से उन्होंने विशेषतः मुस्लिम समाज में आधुनिक शिक्षा और आत्मचेतना का प्रभावी वातावरण निर्मित किया, जिसका दूरगामी प्रभाव भारतीय समाज की वैचारिक संरचना पर परिलक्षित होता है। वस्तुतः सर सैयद का व्यक्तित्व भारतीय नवजागरण की

प्रगतिशील चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा ज्ञानोन्मुख दृष्टि का प्रतिनिधि है। इसलिए उनका योगदान केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य तक सीमित नहीं, बल्कि समकालीन शिक्षा, सामाजिक समावेशन और सांस्कृतिक सह-अस्तित्व के विमर्शों में भी समान रूप से प्रासंगिक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

प्रेमचंद द्वारा लिखित 'सर सैयद अहमद खाँ' पर आधारित यह लेख केवल एक महापुरुष के जीवन-वृत्त का परिचय नहीं देता, बल्कि उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और सामाजिक योगदान का संतुलित मूल्यांकन भी प्रस्तुत करता है। लेखक ने सर सैयद को एक ऐसे युगपुरुष के रूप में देखा है, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी शिक्षा, समाज-सुधार और राष्ट्रीय चेतना के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। लेख में उनके व्यक्तित्व के निर्माण, शिक्षा के प्रति अनुराग तथा समाज-सेवा की भावना को क्रमबद्ध ढंग से उद्घाटित किया गया है, जिससे उनका बहुआयामी स्वरूप पाठक के सामने उभरकर आता है।

इसमें सर सैयद के जीवन के बाह्य पक्षों के साथ-साथ उनके वैचारिक व्यक्तित्व को भी रेखांकित किया गया है। प्रेमचंद ने उनके कार्यों के ऐतिहासिक महत्त्व को रेखांकित करते हुए यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए दूर दृष्टि, कर्मनिष्ठा और संगठन-क्षमता कितनी आवश्यक होती है। महान व्यक्तित्व केवल अपने समय को ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी दिशा प्रदान करते हैं।

कहा जाता है कि प्रेमचन्द का यह लेख सबसे पहले 'बाकमालों के दर्शन' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ था जो हाई स्कूल के पाठ्यक्रम के लिये हिन्दी प्रकाशन, इलाहाबाद से सन् 1928-29 में राम नारायण लाल द्वारा प्रकाशित की गई थी।

प्रेमचन्द अपने मित्र जैनेन्द्र कुमार जो अलीगढ़ (उ.प्र.) के कौड़ियागंज के निवासी थे। उनसे मिलने के लिए 1934 में अलीगढ़ आये थे और बंगाली कोठी में अशफाक हुसैन के मकान में ठहरे थे। प्रेमचन्द पर शोध करने वाले उर्दू विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर सगीर अफराहीम बेग के अनुसार प्रेमचन्द जिस मकान में ठहरे थे वहाँ बाद में दीनियात संकाय के प्रोफेसर इक़बाल हसन बरुला रहते थे। इस संदर्भ में प्रोफेसर रशीद अहमद सिद्दीकी ने भी लिखा है कि प्रेमचन्द जब अलीगढ़ आये थे और बंगाली कोठी में ठहरे थे तो वह उनसे मिलने के लिए गये थे।

प्रख्यात इतिहासकार, राजनयिक और सर सैयद अध्ययन के माहिर प्रोफेसर के. ए. निज़ामी का सर सैयद की सरकारी नौकरी से संबंधित लेख है। जो उनकी पुस्तक 'सैयद अहमद खान' (1965) में छपा था। प्रोफेसर निज़ामी ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि "पुस्तक की संक्षिप्त रूपरेखा देखकर उपयोगी सुझाव देने के लिए मैं आधुनिक भारत के निर्माता, पुस्तकमाला के प्रधान सम्पादक श्री आर. आर. दिवाकर का आभारी हूँ। आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में भारत सरकार ने यह पुस्तक अंग्रेज़ी, हिन्दी और उर्दू के साथ

अन्य भाषाओं में प्रकाशित कराई थी जिसे सन्दर्भ ग्रंथ के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि निज़ामी साहब ने अंग्रेज़ी और हिन्दी की भूमिका में 28 मई 1965 लिखा है जबकि हिन्दी पुस्तक का प्रकाशन 1965 और अंग्रेज़ी की पुस्तक का प्रकाशन 1966 में प्रथम संस्करण दिखाया गया है। जब मूल पुस्तक अंग्रेज़ी में है और उसका अनुवाद हिन्दी में है। हिन्दी अनुवाद एक साल पहले कैसे प्रकाशित की गयी है यह विचारणीय है। अंग्रेज़ी में यह पुस्तक पहली बार नवम्बर 1966 में प्रकाशित हुई, दूसरा संस्करण फरवरी 1974 और फिर 2002 में री-प्रिंट की गई।

‘नवजागरण के महानायक सर सैयद अहमद ख़ाँ’ शीर्षक से कर्मेन्दु शिशिर का लेख है जिन्होंने भारतीय नवजागरण में सर सैयद की भूमिका को बहुत ही व्यापक दृष्टि से मूल्यांकन करते हुए कहा है कि “भारतीय नवजागरण के आसंग में सर सैयद अहमद ख़ाँ की अनदेखी भले ही की गई हो, मगर समग्रता में उनके महत्त्व-आंकलन में कंजूसी अवश्य हुई है। ले-देकर उनकी छवि अंग्रेज़ समर्थक, कांग्रेस विरोधी और साम्प्रदायिक मुस्लिम परस्त की ही बनायी गयी है।...साम्प्रदायिकता के नज़रिये से उनकी छवि उतनी संकीर्ण भी नहीं थी, जितनी बतायी जाती है। वह लिखते हैं कि आधुनिक युग में भारतीय उपमहाद्वीप में उनकी हैसियत का कोई मुस्लिम नायक नहीं हुआ। वे राजा राममोहन राय की परम्परा के मुस्लिम संस्करण थे और कई मायने में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से उनकी उपलब्धियाँ बड़ी थीं। उनके अवदानों का ईमानदारी से आंकलन किया जाय तो उनके योगदान में महामना मदनमोहन मालवीय और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कार्यों का भी समाहार मिलेगा।”

सर सैयद की पुस्तक जिसे बाद में हाली ने असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द करार दिया वह पहली ऐसी पुस्तक थी जिसमें 1857 की जनक्रान्ति के कारणों का विस्तार से उल्लेख करते हुए ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ग़लत नीतियों को उजागर किया गया था और इसी पुस्तक का अनुवाद कर ब्रिटिश सांसद में पेश किया गया जिसे विदेश मंत्री सिसिल बेडन ने विद्रोह पूर्ण लेखन माना और इसे विद्रोह करार दिया।

इस पुस्तक का प्रभाव यह हुआ कि इसी बीच बुनियादी परिवर्तन हुआ कि भारत का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों से निकल कर महारानी विक्टोरिया के हाथों में आ गया। इस बदलाव को सर सैयद अहमद ने एक बहुत बड़े अवसर के रूप में देखा।

वीरेन्द्र कुमार बरनवाल का लेख ‘मुस्लिम नवजागरण की मशाल : सर सैयद अहमद ख़ाँ’ को इस पुस्तक में शामिल किया गया है। सर सैयद पर उनकी गहरी नज़र है। उन्होंने ज़्यादातर मुस्लिम बुद्धिजीवियों और समाज सुधारकों को ही अपनी लेखनी का विषय बनाया है। वह लिखते हैं—“सर सैयद अहमद ख़ाँ (1817-1898) ही दरअसल वह सेतु हैं जिससे होकर पश्चिम की आधुनिक सभ्यता हिंदुस्तान के रूढ़िग्रस्त मुसलमान

समाज तक पहुँच सकी। इतिहास में किसी नये संदेशवाहक को जिन दुर्गम्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, सर सैयद उस अपरिहार्य नियति से कैसे बच सकते थे। अकबर इलाहाबादी के व्यंग्यबाण का शिकार जितना वह अपनी भव्य सोच के कारण हुए उतना कोई दूसरा नहीं हुआ। पर अंततः विदग्ध 'अकबर' ने भी उनकी कर्मठता और मुस्लिम समाज के जागरण में उनके अपूर्व योगदान का लोहा मान लिया था।”

बरनवाल जी का यह कहना है कि असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द के बाद उन्होंने एक और किताब हिन्दुस्तान के वफादार मुसलमान (दि लायल मोहम्मड्स ऑफ इण्डिया) सन् 1860 में लिखी थी। कुछ अपरिहार्य कारणों से यह किताब अधूरी ही छप सकी। जबकि हकीकत यह कि उन्होंने उर्दू और अंग्रेजी में छमाही पत्रिका जारी की जिसके प्रति छमाही के हिसाब से तीन अंक ही प्रकाशित हो सके जो Mofussilite प्रेस मेरठ से J.A. Gibbons के निर्देशन में छपते थे। यह दो कालम की पत्रिका थी जिसमें एक तरफ अंग्रेजी और दूसरी तरफ उसका अनुवाद होता था। उर्दू में इस पत्रिका का नाम रिसाला 'द्वैरखवाहन-ए-मुसलमान' था जबकि अंग्रेजी में An Account of the Loyal Mahomedans of India था। सर सैयद और 1857 पर मैंने अपनी सम्पादित उर्दू और अंग्रेजी पुस्तक में पूरी तफसील दी है जो अंग्रेजी Sir Syad Ahmad Khan's writings on 1857 Revolt-A Documentary record है जो मानक पब्लिकेशन, दिल्ली से 2000 में प्रकाशित हो चुकी है। इस पत्रिका के तीसरे अंक में इटावा के ज़िला मजिस्ट्रेट ह्यूम का पत्र है जिसपर 18 जुलाई 1860 अंकित है। इस आधार पर बरनवाल जी का यह कथन भी सत्यता से परे है कि सर सैयद ने 500 में से अधिकांश पुस्तिकाएं (असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द) इंग्लैण्ड के लिए रवाना कर दी थी। हमारी सूचना के अनुसार वायसराय ने इस किताब का डब्लू. एन. लीस, एल. एल. डी. से उर्दू से अंग्रेजी में अनुवाद कराया और एस.एस. वाइमैन, होम सेक्रेट्रेट कलकत्ता से 1859 में प्रकाशित कर लंदन भेजी थी और इसी पुस्तक पर ब्रिटिश संसद में चर्चा भी हुई थी।

“शेख मुहम्मद इकराम, हफीज़ मलिक, इश्तियाक हुसैन कुरैशी, जेड. ए. सुलेरी, शरीफ अल मुज़ाहिद और सी.एम. नईम जैसे पाकिस्तान के इतिहासकारों द्वारा सर सैयद को हिन्दुस्तान में धर्म के आधार पर दो राष्ट्रों के सिद्धान्त का प्रारम्भिक प्रतिपादक और उसके आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन का पुरोधा साबित करने की कोशिश लगातार की जाती रही हैं...सर सैयद के लेखों और भाषणों से चतुराई के साथ चुने गये कुछ अंशों के आधार पर उन्हें (सर सैयद) दो राष्ट्र के सिद्धान्त का आरम्भिक जननायक बताना नितांत भ्रामक है। उनके विपुल लेखन और भाषणों में ऐसे अनगिनत विचार और उदाहरण भरे पड़े हैं, जो उन्हें एक रूढ़िमुक्त उदार धर्म चिन्तक, साहसी प्रयोगशील शिक्षाशास्त्री और समासेवी राष्ट्रीयता का प्रबल पक्षधर सिद्ध करते हैं।”

यह जानकारी दिलचस्प होगी कि महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से लौटने पर

बम्बई में गुर्जर सभा द्वारा 14 जनवरी 1915 को अपने सम्मान में आमंत्रित अभिनन्दन समारोह में अपने भाषण में हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक में सर सैयद को ही उद्धृत किया था। उनके राजनैतिक गुरु गोपालकृष्ण गोखले और सर सैयद दो ही नाम हैं, जिनसे हिन्दुस्तान में दिया गया गांधी का यह पहला भाषण दीप्त है।

सर सैयद अहमद खाँ केवल अलीगढ़ आंदोलन के प्रवर्तक या आधुनिक शिक्षा के समर्थक ही नहीं थे, बल्कि वे भारतीय नवजागरण के ऐसे दूरदर्शी चिंतक थे जिन्होंने शिक्षा, सामाजिक सुधार, धार्मिक सहिष्णुता तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने मुसलमानों को आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा से जोड़ने के साथ-साथ भारतीय समाज में पारस्परिक सहयोग, संवाद और बौद्धिक जागृति का वातावरण निर्मित करने का प्रयास किया। उनका विश्वास था कि किसी भी समाज की वास्तविक उन्नति शिक्षा, विवेक और आत्मनिर्भरता के माध्यम से ही संभव है।

सर सैयद ने अपने समय के अनेक प्रबुद्ध हिन्दू नेताओं, समाज-सुधारकों और शिक्षाविदों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित किए। राजा जयकिशन दास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा अन्य समकालीन व्यक्तियों के साथ उनके वैचारिक एवं सामाजिक संबंध इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि उनका उद्देश्य संकीर्ण सांप्रदायिक हित नहीं, बल्कि भारतीय समाज का समग्र विकास था। विभिन्न मतभेदों के बावजूद उन्होंने संवाद और सहयोग की परम्परा को बनाए रखा, जो उनके उदार एवं समन्वयवादी दृष्टिकोण का परिचायक है।

अतः कहा जा सकता है कि भारतीय नवजागरण के इतिहास में सर सैयद अहमद खाँ का योगदान बहुआयामी और स्थायी महत्त्व का है। शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन, आधुनिक चेतना का प्रसार तथा राष्ट्रीय जीवन में बौद्धिक जागरण उनकी सबसे बड़ी देन है। आज भी उनके विचार सामाजिक समरसता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राष्ट्रीय एकता के लिए समान रूप से प्रेरणादायी एवं प्रासंगिक हैं।

दो शब्द

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उस देश या समाज की सामूहिक पहचान, एकता और राष्ट्रीय चेतना को आकार देने वाली अतीत की महत्वपूर्ण घटनाओं, संघर्षों, सांस्कृतिक विकास और उपलब्धियों का कालक्रमानुसार विवरण होता है, जिसमें उन युग प्रवर्तक व्यक्तित्वों का भी जिक्र होता है जिन्होंने अपने विचारों, कर्मों और दूरदर्शिता से देश-समाज को नई दिशा प्रदान की। भारतीय नवजागरण के इतिहास में सर सैयद अहमद खान (1817-1898) ऐसे ही एक विलक्षण व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने उस समय आधुनिक शिक्षा, वैज्ञानिक चेतना और सामाजिक जागरण का स्वर बुलंद किया, जब भारतीय समाज औपनिवेशिक शासन, सामाजिक रूढ़ियों और बौद्धिक जड़ता के कठिन दौर से गुज़र रहा था। उन्होंने भारतीय इतिहास के एक अत्यंत संक्रमणशील दौर में शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि और सामाजिक पुनर्जागरण की जिस चेतना का सूत्रपात किया, वह आज भी प्रासंगिक और जीवन्त रूप में हमारे सामने मौजूद है। इन्हीं अर्थों में सर सैयद अहमद खान का जीवन एवं युगांतरकारी व्यक्तित्व अपने युग की सीमाएँ लाँघकर आने वाली पीढ़ियों के लिए विचार, संघर्ष और सृजन के आलोक-स्तंभ के रूप में विद्यमान हैं जिनके मार्फत भारतीय आधुनिकता के विकासक्रम को बेहतर समझा जा सकता है।

सर सैयद अहमद खान ने उन्नीसवीं शताब्दी में अपने विचारों और प्रयासों से न केवल मुस्लिम समाज, बल्कि सम्पूर्ण भारत के बौद्धिक और सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। वे ऐसे समय में प्रकट हुए जब मुगल साम्राज्य का अस्तित्व समाप्त हो चुका था और अंग्रेज़ी सत्ता पूरे देश में स्थापित हो गई थी। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास की एक निर्णायक घटना थी। इस विद्रोह की असफलता के बाद मुसलमानों पर अंग्रेज़ों का संदेह और भी बढ़ गया। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से वे गहरे संकट में आ गए। इस स्थिति में सर सैयद ने अनुभव किया कि केवल भावनाओं और अतीत की महिमा से मुसलमान आगे नहीं बढ़ सकते; यदि उन्हें प्रगति करनी है तो आधुनिक शिक्षा और नई सोच को अपनाना होगा। यही कारण है कि उन्होंने समाज में शिक्षा-सुधार को ही उत्थान का साधन बनाया और सन् 1875 में मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की। आज यही संस्था अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में जानी जाती है। उस दौर में यह केवल एक शैक्षिक केंद्र नहीं, बल्कि एक बौद्धिक और सांस्कृतिक आंदोलन का प्रतीक बना। अलीगढ़

आंदोलन ने मुस्लिम समाज को आधुनिक विज्ञान, अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी विचारधारा से जोड़ा। इसके प्रभाव से मुसलमानों में आत्मविश्वास जागा और वे नई पहचान के साथ राष्ट्रीय जीवन में भाग लेने लगे। इस प्रकार सर सैयद अहमद खान केवल एक शिक्षाविद् नहीं थे, अपितु एक ऐसे मार्गदर्शक थे जिन्होंने मुस्लिम समाज को आधुनिकता, प्रगतिशीलता और आत्मसम्मान का नया पाठ पढ़ाया।

सैयद अहमद का संपूर्ण जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि समाज का वास्तविक परिवर्तन शिक्षा और विचार के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने आधुनिक शिक्षा को महज रोजगार का साधन नहीं माना, बल्कि उसे व्यक्ति और समाज के बौद्धिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक विकास का आधार स्वीकार किया। यही कारण है कि उनका चिंतन आज भी भारतीय समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। वर्तमान समय में जब शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक समरसता और सहिष्णुता जैसे प्रश्न पुनः राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में हैं, तब सर सैयद के विचारों का पुनर्पाठ और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है।

सर सैयद अहमद खान के जीवन, शिक्षा-दर्शन, धार्मिक चिंतन, अलीगढ़ आंदोलन तथा सामाजिक योगदान पर अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार एवं अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। किंतु जब इन समस्त अध्ययनों का गंभीरता से अवलोकन किया जाता है तो एक बात प्रायः स्पष्ट है कि उनके व्यक्तित्व के अनेक आयाम आज भी विखंडित रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं। कहीं उन्हें केवल एक शिक्षाविद् के रूप में देखा गया है, कहीं समाज-सुधारक के रूप में, तो कहीं राजनीतिक दृष्टि से उनका मूल्यांकन किया गया है। परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व की समग्रता प्रायः ओझल रह जाती है।

इस पुस्तक के संपादन का मूल उद्देश्य किसी व्यक्ति का स्तुतिगान करना नहीं, बल्कि उसके जीवन और विचारों का निष्पक्ष, संतुलित तथा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सही मूल्यांकन प्रस्तुत करना है। चूँकि सर सैयद को समझने के लिए मात्र उनके जीवन-प्रसंगों का अध्ययन पर्याप्त नहीं, उनके समय की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों की गहरी पड़ताल भी ज़रूरी है। इसलिए पुस्तक में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन तद्रूपीन संदर्भों के आलोक में करने का प्रयास किया गया है, जिससे पाठक उनके चिंतन की वास्तविक प्रेरणा और उनके महत्तर उद्देश्य को समझ सके। इस प्रस्तुति में यदि कहीं कोई तथ्यगत त्रुटि, दृष्टिगत सीमा अथवा कोई अन्य कमी रह गई हो तो उसके लिए मैं खुद को उत्तरदायी मानते हुए विद्वानों और सुधी पाठकों के सुझावों का हृदय से स्वागत करूँगा। इसी आशा और विश्वास के साथ यह पुस्तक पाठकों को समर्पित है।

अनुक्रम

भूमिका/5

दो शब्द/11

1. स्वर्गीय सर सैयद का जीवन (1817-1898 ई.)/15

मौलाना अल्ताफ़ हुसैन 'हाली'

अनु.-डॉ. राजीवलोचन नाथ शुक्ल/डॉ. परवेज़ फ़ातिमा

2. सर सैयद अहमद खाँ/39

प्रेमचंद

3. सरकारी नौकरी/46

के. ए. निज़ामी

4. नवजागरण के महानायक : सर सैयद अहमद खाँ (1817-1898 ई.)/57

कर्मन्दु शिशिर

5. मुस्लिम नवजागरण की मशाल : सर सैयद अहमद खाँ/87

वीरेन्द्र कुमार बरनवाल

6. भारतीय नवजागरण : संघर्ष और परिवर्तन/144

डॉ. राहत अबरार

7. परिशिष्ट/178